(३) जल भरि-भरि लाओ...

जल भरि-भरि लाओ, अपनी सखियों को बुलाओ;
आजा माता का न्हवन कराना है ओ...
कोई मङ्गल गीत सुनाओ, सिद्धों का सन्देश सुनाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ टेक ॥

कोई माता को तिलक लगाओजी लगाओजी लगाओजी;
सुत त्रिभुवन तिलक है आयोजी आयोजी आयोजी।
निर्मल जल से चरण पखारो, निज परिणति को शुद्ध बनाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 1 ॥

कोई माता को कंगन पहनाओजी पहनाओजी पहनाओजी;
शुद्ध आतम का दर्शन पाओजी हाँ पाओजी हाँ पाओजी;
अन्तिम भवधारी सुत आयो, माताजी को मन हरषाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 2 ॥

कोई माता को दर्पण दिखाओजी दिखाओजी दिखाओजी;
ज्ञेयाकारों में ज्ञान दिखाओजी दिखाओजी दिखाओजी;
दर्पण सम निज ज्ञान लखाओ पर परिणति से चित्त हटाओ;
आज माता का मन बहलाना है ॥ 3 ॥